ओ३म्

प्रकाशन की तिथि 01.04.2017

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

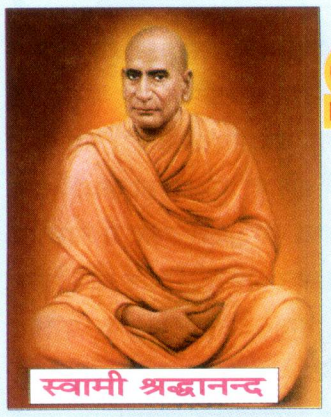

शुद्धि समाचार

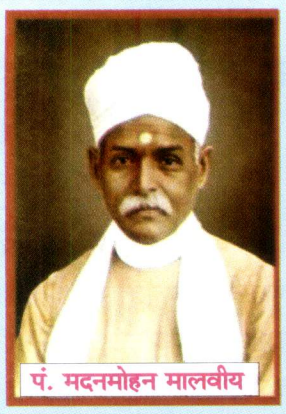

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 40 अंक 4

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

अप्रैल 2017 विक्रम सम्वत् 2074 चैत्र-बैशाख

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

रामनवमी पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम राम और वैदिक धर्म

वेद और वैदिक धर्म-संस्कृति सारे संसार में सबसे प्राचीन है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने जब अमैथुनी सृष्टि कर मनुष्यों को उत्पन्न किया तो जीवात्माओं को मानव शरीर प्रदान करने की ही भांति सब मनुष्यों को धर्म पालन व भोग एवं अपवर्ग के लिए चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान भी चार आदि ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को उत्पन्न कर दिया। सृष्टि के आरम्भ से ही उत्पन्न स्त्री पुरुषों ने वैदिक धर्म का पालन करना आरम्भ किया। समय बीतने के साथ अनेक मनुष्य उत्पन्न होते रहे और वैदिक धर्म का पालन करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होते रहे। इस प्रकार सृष्टि के किसी एक मन्वन्तर के त्रेता युग में चक्रवर्ती राजा दशरथ के कुल में माता कौशल्या से भगवान राम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी को हुआ था। भगवान राम की शिक्षा-दीक्षा उन दिनों की परिपाटी के अनुसार गुरुकुल प्रणाली से हुई जहां उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन करने के साथ उन दिनों ऋषि-मुनियों द्वारा निर्मित ज्ञान की विभिन्न शाखाओं मुख्यतः राजनीति, धर्म, शस्त्र विद्या, राजा के धर्म व कर्तव्य आदि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया। श्री रामचन्द्र जी ने गुरुकुलों में न केवल ज्ञान ही प्राप्त किया अपितु जितना ज्ञान अर्जित किया उसे अपने आचरण में लाकर एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो इस समय के अन्य क्षत्रियों व गुरुकुल शिक्षित ब्रह्मचारियों में देखने को नहीं मिलता था। ऐसे गुणवान व चरित्रवान तथा ऋषि-मुनियों, आचार्यों, विद्वानों व माता-पिता के आज्ञापालक व उन्हें पूरा करने वाले राम के समान दूसरा व्यक्ति उस समय कौशल देश व सारे संसार में नहीं था। देश, समाज व विश्व का प्रत्येक व्यक्ति उनकी कीर्ति व यश से प्रभावित होकर उनका गुण-गान करने के साथ उन्हें आदर्श मानने लगा। राम चन्द्र जी के इन्हीं सब गुणों से प्रभावित होकर महर्षि वाल्मीकि ने उन पर एक महाकाव्य "रामायण" का प्रणयन किया जो विश्व साहित्य में

आज भी अनुपमेय एवं अद्वितीय ग्रन्थ है। इसे जो भी पढ़ता है वह कृतकृत्य हो जाता है।

वाल्मीकि रामायण का अध्ययन करने पर भगवान श्री रामचन्द्रजी के बारे में जो तथ्य सामने आते हैं वह यह कि वह पूर्णतया वैदिक धर्म व संस्कृति के पालक, रक्षक, प्रचारक, उद्धारक होने के साथ एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श प्रजा-पालक- सेवक, आदर्श मित्र, आदर्श युद्धकर्ता आदि थे। यह सब गुण उनमें अपने माता-पिता व आचार्य ऋषि-मुनियों की शिक्षा व अपने पूर्व व वर्तमान जन्म के संस्कारों से आये थे। किसी भी पुरुष के जीवन की सार्थकता राम जैसा बनने में ही है। यदि हम उन जैसे नहीं बने तो हमारा जीवन एक प्रकार सार्थक नहीं कहा जा सकता। हम जहां जिस रूप में भी हों हमें हर स्थिति में वैदिक धर्म व वैदिक शिक्षाओं के अनुरूप अपने जीवन को ढालना है। भगवान राम जैसा यदि दूसरा उदाहरण हमें भारत व आर्यावर्त्त के इतिहास में ढूंढना हो तो महाभारत में योगेश्वर श्री कृष्ण के रूप में मिलता है। भगवान कृष्ण के बारे में यदि संक्षेप में कुछ कहना हो तो बस इतना कहना ही पर्याप्त है कि वह वेदों व उसकी शिक्षाओं के पालक व रक्षक थे। इसी प्रकार से इतिहास में एक नाम और है जो इसी परम्परा में,देश काल व परिस्थिति के अनुसार कुछ भिन्न प्रतीत होता हुआ भी, इसी प्रकार से स्तुत्य, पूज्य, आदरणीय, अनुकरणीय व माननीय है। महर्षि दयानन्द ने श्री रामचन्द्रजी व योगेश्वर कृष्ण के समय की वैदिक धर्म व संस्कृति को अपने युग, सन् 1863 ई. व उसके पश्चात, स्थापित व पुनरूद्धारित किया जिसका इतना अधिक पतन हो चुका था कि उसे पुनर्जीवित करना कठिन व असम्भव प्रायः हो गया था। चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद तो प्रायः लुप्त व अप्राप्त हो चुके थे, उन्हें खोज कर भारत व विश्व के सभी लोगों को प्राप्त कराया। वेदों के मन्त्रों के अर्थ जिसको करने की क्षमता उनके युग में व पूर्व के किन्हीं विद्वानों में नहीं थी, वह भी उन्होंने न केवल स्वयं ही किये अपितु हम सबको करने भी सिखाये। उनके समय में हमें यह नहीं पता था कि वेद किन ग्रन्थों की संज्ञा है, नाम हैं वह भी अपने अपूर्व विद्या बल से उन्होंने हमें बताये। उनके समय में वैदिक धर्म पतन व पराभव को प्राप्त होकर विकृत हो चुका था, उसमें नाना प्रकार के अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां आदि मिल चुकी थीं, जिनसे देश व समाज अन्धकार में गिरकर दुःख भोग रहा था, उस गर्त से निकाल कर सच्ची ईश्वर पूजा, माता-पिता-आचार्यों की सेवा व पूजा,

– शेष पृष्ठ 6 पर

शुद्धि समाचार के सभी पाठकों को
वैशाखी एवं रामनवमी
की हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय संस्कृति का यूरोपीयकरण

–डॉ. देवेश प्रकाश आर्य
मो. 9968573439

भारत की हजारों साल पुरानी संस्कृति जो वेद, उपनिषद, दर्शन रूपी अटूट खम्भों पर टिकी है इस देवीय संस्कृति को मध्य–मध्य में विदेशी आक्रान्ताओं तथा लुटेरों द्वारा बहुत बड़े स्तर नष्ट करने का प्रयास किया गया, आजादी से पूर्व अग्रेंजों ने बहुत ही सुनियोजित तरीके से भारतीय संस्कृति व साहित्य को नष्ट करने का प्रयास किया। दुख इस बात का है कि आजादी के बाद भी भारतीय संस्कृति संरक्षण में कभी किसी ने इसके वर्धन की बात नहीं की अपितु हमारी ऋषि परम्पराओं को और ज्यादा विखन्डित करने का प्रयास किया गया है। जैसा कि मैंने इसके विषय का नाम लिखा है भारतीय संस्कृति का यूरोपीयकरण आज आपको पूरे प्रमाण के साथ बताऊगा कि किस प्रकार भारत को यूरोप बनाने की कोशिश की जा रही है। सन् 1953 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु ने कनाडा के प्रधानमंत्री को पत्र लिखा और कहा कि मैं भारत को यूरोप जैसा बनाना चाहता हूँ जिस देश का प्रधानमंत्री ही भारत को यूरोप बनता हुआ देखना चाहता हो तो सामान्य सोच को तो हम महत्त्व ही नहीं दे रहे हैं 1947 की आजादी के पहले प्रधानमंत्री नेहरु ने देश से वायदा किया था कि मैं प्रधानमंत्री बनते ही गौ रक्षा कानून पास करुंगा जिससे देश का पशुधन सुरक्षित हो सके, प्रधानमंत्री बनने के बाद नेहरु ने गौहत्या कानून पर विचार करना ही उचित न समझा और उस पर एक बेहूदा तर्क प्रस्तुत किया कि यूरोप के लोग गाय खाते हैं और यदि हम गौ वध को रोकते हैं तो यूरोप के लोग हमको पिछड़ा हुआ मानेगें।

आज हमारे सामने प्रश्न इस बात का है कि आजादी के बाद भी गुलामी की परम्पराओ को क्यों ढोया जा रहा है, देश जब आजाद हुआ था तब यह निश्चय हुआ था कि आजादी के 10 वर्षो के बाद अंग्रेजी भाषा के स्थान पर हिन्दी भाषा को आधिकारिक रूप से कामकाज की भाषा बनाकर राष्ट्र भाषा का दर्जा दिया जाएगा लेकिन वस्तुस्थिति कुछ और ही है आज हिन्दी अपने ही देश में अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रही है, आज हमारे देश में लोग अंग्रेजी के 4 शब्दों को जानकर अपने आपको ज्ञानी साबित करते हैं हिन्दी बोलने वाले व्यक्ति को हेय दृष्टि से देखा जाना इस देश की राष्ट्र भाषा का साक्षात् अपमान है चाहें कितनी भाषाओं का ज्ञान हो लेकिन ये ज्ञान मातृ भाषा के अपमान के साथ स्वीकार्य नहीं होगा।

इस देश को यूरोप बनाने का जो षड़यंत्र चल रहा है। उसके कुछ जीवित प्रमाण देना चाहता हूँ सम्बन्धों के शब्दों में हमने अपने सार्थक और सारगर्भित शब्दों को छोड़ कर यूरोप के शब्दों को अपनाना शुरु कर दिया है सृष्टि के प्रारम्भ से ही नमस्ते अभिवादन का सबसे उपयुक्त शब्द है लेकिन अब हम उसको बोलना छोड़ चुके हैं और उसके स्थान पर अंग्रेजों द्वारा लाया गया यूरोपीय शब्द Good Morning, Good nigth बोलते थकते नही हैं, जबकि नमस्ते का अर्थ है मैं आपको नमन करता हूँ और आप बोलने के साथ एक विनियोग भी करते हैं जिसमें आप हाथ जोड़ते हैं। अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि Good Morning कहकर हाथ जोड़ना कहां तक युक्ति संगत लगता है। हम धीरे–धीरे यूरोप के शब्दों की गुलामी को स्वीकार करते गए और हमने अपने पवित्र सम्बन्धों के शब्दों में भी यूरोपीयकरण कर दिया– पढ़ाने वाले आचार्य को Sir, या Madam कह दिया आपको बता देना चाहता हूं कि सर जो शब्द है वो गुलामी का प्रतीक है यूरोप के अन्दर जो ज्यादा गुलाम बना लेता था उसको सर की उपाधि से विभूषित किया जाता था हमारे देश में भी बहुत से लोगों को सर की उपाधि से अलंकृत किया गया, ऐसे ही दूसरा शब्द Madam है जो फ्रेन्च का शब्द है जिसका अर्थ है मेरी औरत, अब मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या कोई स्त्री जो हमें पढ़ाती हो, उसको Madam कहना कहा तक उचित है क्योंकि मैडम का तो अर्थ मेरी औरत है, अब इसका विचार आपको करना है। एसे ही बहुत बड़ी श्रंखला है जो कि सम्बंन्धों के मूलभावों को समाप्त कर रही है जैसे Uncle, Aunty, Sir, Madam, Mr, Mrs. इत्यादि, चाचा, ताऊ, फूफा, मामा कहने पर जो अलग–अलग, भाव पैदा होते हैं वो Uncle Aunty कहने पर नहीं, हमारे देश में संस्कृत जैसी प्राचीन भाषा विद्यमान है जो कि अधिकांश भाषाओं की जननी भी है संस्कृत के शब्दों की संख्या 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्द हैं। इतनी महान शब्द संख्या होने पर भी हम क्यों एक ही शब्द से इतने रिश्ते निभाने की कोशिश करते हैं।

आजादी से पूर्व अंग्रेजों ने Govt of India Act बनाया था उसी में एक Indian education Act भी बनाया उसी Act के अन्तर्गत मैकाले शिक्षा पद्वति और Convent Schools को बढ़ावा दिया गया जिससे कि भारत की मूल शिक्षा व्यवस्था नष्ट हो सके, राजा राम मोहन राय जैसे लोगों ने अंग्रेजों के साथ मिलकर अंग्रेजी स्कूलों का खूब प्रचार किया और भारतीय जनमानस को उसी के शिक्षा व्यव्यथा पर भ्रमित किया, उसी समय एक अंग्रेज और आया जिसका नाम था विलियम हन्टर, उस हन्टर ने सबसे ज्यादा भारतीय साहित्य को नष्ट करने का प्रयास किया सबसे पहले उसने एक Hunter आयोग बनाया जिसमें कई संस्कृत के विद्वानों को उस टीम में शामिल कर मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि बड़े–बड़े ग्रन्थों में प्रक्षिप्त, करने का कार्य किया और अन्त में ब्रिटिश संसद में भारतीय साहित्य नष्ट होने की रिपोर्ट भी सौंपी।

हमारे देश की मूल परम्पराओं को नष्ट करने के पीछे बड़े–बड़े राजनेता तथाकथित समाज सुधारकों का भी भरपूर योगदान रहा है, उसमें सबसे बड़ा नाम श्री जवाहर लाल नेहरु का आता है, आजादी से पहले ईष्ट इंडिया कम्पनी इस देश के ऊपर अत्याचार करती रही आजादी के बाद ये तय हुआ कि सभी विदेशी कम्पनी भारत से निकाली जाएगी लेकिन यहाँ भी नेहरु ने राष्ट्र के साथ छल कर दिया और केवल बड़ी कम्पनी को हटाकर बाकी सभी कम्पनियों को यथावत देश को लूटने का प्रमाण पत्र दे दिया।

हमारे त्योंहारों को भी नष्ट करने का प्रयास किया, भारत के सभी पर्व वैज्ञानिक विचार पर आधारित हैं लेकिन धीरे–धीरे हमें यूरोप के पर्व अच्छे लगने लगे। उसके पीछे कारण था कि तत्कालीन सरकार उन पर्वो को प्रचार और आश्रय देने लगी। हमें पता ही नहीं चला कि हम एक नये यूरोप का निर्माण करने में लगे हुए हैं, प्रमाण के रूप में नववर्ष को ही लेते हैं भारतीय नववर्ष चैत्र में मनाया जाता था लेकिन भारतवासी के मन में यह झूठ फैलाया गया कि नववर्ष तो 1 जनवरी को होता है मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि 1 जनवरी न तो साल का पहला महीना है और न ही 1 जनवरी साल का पहला दिन। 1752 के ब्रिटिश कलेन्डर Act को देखने से पता चलता है कि 1752 तक अंग्रेज भी नववर्ष चैत्र अर्थात् अप्रैल /मार्च में मनाते रहे हैं 1752 से पहले दिसम्बर 10 वाँ महीना होता था जनवरी 11 वाँ, फरवरी 12 वाँ, और मार्च पहला महीना होता था, इसके कुछ प्रमाण मैं आपको देता हूँ संस्कृत में सितम्बर को सप्त+अम्बर, अक्टूबर को अष्ट+अम्बर, नवम्बर को नव+अम्बर, दिसम्बर को दश+अम्बर इसका अर्थ है सप्त+ अम्बर–सातवां

आकाश, अष्ट- अम्बर- आठवां, आकाश, नव अम्बर-नौवां आकाश उसी तरह दश+अम्बर दशवां आकाश एक दूसरा प्रमाण मैं और देता हूँ 25 दिसम्बर को क्रिसमस मनाया जाता है क्रिसमस को रोमन में X MAS लिखते हैं इसका भी यही अर्थ है कि X अर्थात् दशवां Mas अर्थात महीना, इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि नववर्ष जो है वो चैत्र मास में ही मनाना वैज्ञानिक व प्राकृतिक रूप से सत्य है।

एक दूसरा झूठ अंग्रेजों ने हमारे भीतर बिठाया कि दिन तो रात के 12 बजे से प्रारम्भ होता है, अब इस पर भी हमें गम्भीरता से चिंतन करना पड़ेगा कि क्या वास्तव में दिन की शुरुआत रात 12 बजे से ही है, इस पर भी एक भारतीय वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ, हमारे भारत में दिन की शुरुआत लगभग सूर्योदय के 1 घंटा पूर्व मानी जाती है अर्थात 5 बजे से जब भारत में 5 बजते हैं उस समय लंदन में रात के 12 बजते हैं अब आप देखिए हमारी सही चीजों को लेकर मूर्ख अंग्रेजों ने अपनी गलत चीजों का गुलाम बना दिया, रात के 12 बजे तो भयावह रात्रि होती है दिन तो सूर्योदय से ही प्रारम्भ होता है लेकिन हम तो 1 जनवरी को ही Happy New Year की बधाई देगें वो भी रात के 12 बजे से, मित्रों अब हमको समझना होगा कि हमारा नववर्ष तो 28 मार्च को है उस दिन से 2074 विक्रमी संवत प्रारम्भ हो रहा है।

प्रिय पाठकों अब समय आ गया है कि अपनी परम्पराओं की रक्षा करने का उन पर गर्व करने का उनको किस प्रकार आगे बढ़ाना है किस प्रकार वो सारे भारतीय जनमानस के पटल पर अंकित हो सकती हैं इन सभी बातों पर विचार करना इस देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बन गया नहीं तो वो नेहरु जी का पत्र कि मैं भारत को यूरोप जैसा देखना चाहता हूँ वही यूरोप आपकी आखों के सामने होगा। जहाँ न सम्बन्ध होगा न कोई मर्यादा होगी अतः ऐसे यूरोप से हम सभी को इस देश को बचाना होगा। - जय हिन्द !

सम्पादकीय

- आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

आधुनिक भारत के नव निर्माता स्वामी दयानन्द ने भारतीय सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन में समागत विकृतियों विसंगतियों के समूलोच्छेदन के लिए प्राचीन वैदिक नियमों पर आधारित आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में की थी। इसका उदेश्य था कि आर्यावर्त देश पुनः अपनी गौरवमयी परम्परा जो आदि सृष्टि से चली आ रही थी प्राप्त हो इसकी स्थापना के पीछे समस्त प्राणिमात्र का हित सन्निहित था। यह बात आर्य समाज के नियमों में परिलक्षित है जैसे संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अपनी स्थापना काल से ही आर्य समाज बहूद्देश्यीय सकारात्मक आयामों से जुड़ा रहा है। देश और समाज के नाना प्रसंगों में इसकी सफलता पूर्ण गतिविधियों ने देश की छवि को समुज्वलता प्रदान की। महर्षि दयानन्द इस बात को निःसकोच मानते थे कि प्राचीन काल में यह भारत देश विश्व में सर्वोन्नत था । सर्वत्र आर्यों का ही सार्वभौम शासन था। सत्य सनातन वैदिक धर्म की ही सम्पूर्ण विश्व में सत्ता थी। महाभारत काल तक यहाँ के राजा चक्रवर्ती सम्राट हुआ करते थे। अन्य राजाओं की स्थिति माण्डलिक राजाओं की थी जो एतद्देशीय चक्रवर्ती राजा की छत्रछाया में प्रजा की देख-रेख करते थे । मनुस्मृति 2/20 के श्लोक

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद ग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः को उद्धत करते हुए महर्षि ने लिखा है कि इसी आर्यावर्त देश में उत्पन्न ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के मनुष्य अपने-अपने योग्य विद्या चरित्रों की शिक्षा और विद्याभ्यास करें। भारत वर्ष अपने प्राचीन विश्व गुरु के गौरव को पुनः प्राप्त कर सके। प्रत्येक मनुष्य वेद के निर्देश के अनुसार धर्म का पालन करता हुआ विश्व कल्याण का माध्यम बने। शोषित और शोषण का भाव समाप्त हो विश्व के समस्त मानव परस्पर भाई-भाई की तरह प्रीति पूर्वक व्यवहार करें। प्राणि मात्र के प्रत्येक कर्म के मूल में वैदिक विचारधारा प्रमाण के रूप में हो। काल्पनिक और अनार्ष ग्रन्थों की जगह वेद और वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार हो जिससे मानव जाति भय-भ्रान्ति से छूटकर जीवन में परम सौभाग्य- अहोभाग्य को प्राप्त हो। अनार्ष परम्परा का विलोप तथा वैदिकता का पुनः बोल-बाला हो। इन्ही उद्देश्यों को चिरस्थायी करने के लिए स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। उनके कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के संकल्प को चरितार्थ करने के लिए आर्य जनों को कृत संकल्प तथा पुरुषार्थी होना होगा। नव संवत्सर और स्थापना दिवस के इस अवसर पर आर्य जन अपने को ऋषि-ऋण से उन्मुक्त होने के आन्दोलन को जन-जन तक पहुँचाने का व्रत ले और उद्देश्य पूर्ति तक समाहित चित्त होकर पुरुषार्थी बने रहें तभी कृतकार्य हो सकेंगे।

वेदामृत

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें!

अग्ने यं यज्ञमधवरं विश्वतः परिभूरसि।

स इद् देवेषु गच्छति ॥ - ऋ. १ । १ । ४

ऋषिः-**मधुच्छन्दाः**॥ देवता-**अग्निः**॥ छन्दः-**गायत्री**॥

विनय – हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव ! कोई भी यज्ञ तबतक सफल नहीं हो सकता जबतक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के, अर्थात् देवों के द्वारा ही सब-कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ-संघठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता- सफल नहीं होता। हे प्रभो ! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएँ तो हे प्रकाशक देव ! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना, हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि " हे अग्नि ! जिस कुटिलता व हिंसा-रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है- सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन-शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के ज़ोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

शब्दार्थ-अग्ने-हे परमात्मन्! **त्वम्**- तुम **यम्**- जिस अध्वरं **यज्ञम्**-कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि** – सब ओर से व्याप लेते हो **स इत्**- केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**-दिव्य फल लाता है।

'पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का पावन एवं प्रेरणाप्रद जीवन'

महान कार्य करने वाले लोगों को महापुरुष कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि महापुरुष अमर होते हैं। भारत में महापुरुषों की एक लम्बी श्रृंखला वा परम्परा है। ऐसे ही एक महापुरुष पं. गुरुदत्त विद्यार्थी थे। आप उन्नीसवीं शताब्दी में तेजी से पतन को प्राप्त हो रहे सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति के रक्षक, सुधारक, देश की आजादी के मन्त्रदाता व प्रेरक सहित समग्र सामाजिक व राजनैतिक क्रान्ति के जनक ऋषि दयानन्द के भक्त, अनुयायी और उनके मिशन के प्रचारक, प्रसारक व रक्षक थे। 26 अप्रैल उनकी जयन्ती का दिवस है। उनके देश व जाति पर ऋण से उऋण होने के लिए उन्हें व उनके कार्यों को स्मरण कर श्रद्धांजलि देना प्रत्येक वेदभक्त, ऋषिभक्त, आर्यसमाज के अनुयायी व देशवासी का कर्तव्य है। यदि वह न हुए होते तो आर्यसमाज का इतना विस्तार न होता, डीएवी आन्दोलन जो उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी में देश भर में फैला, वह न हुआ होता और उन्होंने जो साहित्य हमें दिया, उससे आर्यसमाज व देश वंचित रहता।

महर्षि दयानन्द की मृत्यु के बाद आर्यसमाज के आन्दोलन का मुख्य योद्धा बनने वाले इस ऋषिभक्त व वैदिक धर्म के अनुपम प्रेमी का जन्म 26 अप्रैल, सन् 1864 को मुलतान (पाकिस्तान) में श्री रामकृष्ण जी के यहां हुआ था। आप अपने माता–पिता की एक मात्र पुत्र व सबसे छोटी सन्तान थे। आपके पिता एक प्रतिष्ठित अध्यापक थे। पांच वर्ष की अवस्था में आपके पिताजी ने घर पर ही आपको फारसी वर्णमाला का ज्ञान करवाना आरम्भ कर दिया था। बचपन से ही आपकी स्मरण शक्ति गजब थी तथा गणित में प्रश्नों का हल करने की आपमें अदभुद योग्यता थी। लाखों तक की संख्या की गणना वा गुणा भाग आप मौखिक ही कर देते थे। बचपन में आपको उर्दू के वाक्यों की फारसी में पद्य रचना करने का भी अभ्यास हो गया था। बाद में काव्य रचना में आपकी रूचि न रही। अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन तथा पंजाब के प्रसिद्ध धार्मिक नेता मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के सभी मतों व धर्मों में अन्धविश्वासों वा पाखण्डों के खण्डन से प्रभावित होकर आप सन्देहवादी वा नास्तिक बन गये थे। पुस्तकों को पढ़ने में आपकी बालकाल व किशोरावस्था से ही गहरी रूचि थी। आपके जीवनी लेखक प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखा है कि **'झंग से मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करके आप मुलतान के हाई स्कूल में प्रविश्ट हो गये। उन दिनों स्कूल में मुख्याध्यापक बाबू मनमोहन सरकार थे। उन्होंने शिष्य की प्रतिभा को पहचाना। अपने मेधावी शिष्य को नई–नई पुस्तकें देते रहते थे। आपने स्कूल के पुस्तकालय की सब पुस्तकं पढ़ डाली। मुलतान में लहंगा खां के उद्यान में एक विशाल पुस्तकालय था उसका व नगर के अन्य पुस्तकालयों का भी पूरा–पूरा लाभ उठाया। उन्हीं दिनों श्री मास्टर दयाराम जी से Bible in India पुस्तक लेकर ध्यानपूर्वक पढ़ी। इन्हीं मास्टर जी से आपने एक और प्रसिद्ध पुस्तक India in Greece लेकर पढ़ी।'** इस वर्णन से आपकी पुस्तकों के अध्ययन व उनसे ज्ञान प्राप्ति करने की प्रवृत्ति का अच्छा ज्ञान होता है। आपमें पुस्तकों को पढ़ने का यह शौक जीवन पर रहा। इस प्रकार स्कूली विषयों व इतर ग्रन्थों का अध्ययन करते हुए आपने विज्ञान में एम.ए. किया और पूरे पंजाब में प्रथम स्थान पर रहे। यह भी बता दें उन दिनों पंजाब में पूरा पाकिस्तान एवं भारत के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश राज्यों सहित दिल्ली के भी कुछ भाग सम्मिलित थे।

आपने मुलतान में अपने दो घनिष्ठ मित्रों लाला चेतनानन्द व पण्डित रैमलदास की प्रेरणा से 20 जून सन् 1880 को मुलतान के आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की थी। आर्यसमाज में प्रविष्ट होते ही आपने संस्कृत की आर्ष व्याकरण का अध्ययन आरम्भ किया और कुछ समय में इसमें योग्यता प्राप्त कर ली। मुलतान में ही आप डा. वैलन्टाइन की Easy Lessons in Sanskrit Grammer पुस्तक को पढ़कर ऋषि दयानन्द की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संस्कृत भाग को बिना किसी की सहायता के समझने में सक्षम हो गये थे। आपका संस्कृत प्रेम बढ़ता गया और एक समय ऐसा भी आया कि आप अपने घर पर ही संस्कृत की कक्षायें चलाने लगे जिसमें आर्यसमाज के अनुयायियों सहित बड़े बड़े सरकारी अधिकारी भी आपसे संस्कृत व्याकरण पढ़ते थे।

मुलतान में शिक्षा पूरी कर आप सन् 1881 में लाहौर के राजकीय कालेज में प्रविष्ट हुए थे, यहीं से आपने साइंस में एम.ए. किया था और यहीं पर कुछ समय अध्यापन भी किया था। लाहौर में अध्ययन काल में ही आप आर्यसमाज लाहौर के सम्पर्क में आ गये थे। यहां आपके सहपाठियों में लाला जीवनदास जी सहित महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय भी हुआ करते थे। इन सभी ने देश व आर्यसमाज की अविस्मरणीय सेवा की है। ऐसा होते हुए सन् 1883 का वर्ष आ गया था। सितम्बर, 1883 में महर्षि दयानन्द जोधपुर में प्रचार कर रहे थे। वहां 29 सितम्बर की रात्रि को उन्हें दूध में विष दे दिया गया था जिससे वह रूग्ण हो गये। विष इतना प्रभावशाली था कि इससे महर्षि दयानन्द जी का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन बिगड़ता गया। उपचार में भी गड़बड़ी हुई जिससे स्वास्थ्य गिरता चला गया। अक्टूबर के मध्य व अन्तिम सप्ताह में देश भर के आर्यसमाजों में स्वामी जी के रोग का समाचार फैल गया। लाहौर के आर्यसमाज द्वारा अपने दो सदस्यों लाला जीवनदास और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी को स्वामी दयानन्द जी की सेवा शुश्रुषा के लिए भेजा गया। यह दोनों साथी 29 अक्टूबर को अजमेर पहुंचे। 29 व 30 अक्टूबर, 1883 के दो दिनों में पण्डित गुरुदत्त जी को महर्षि दयानन्द को अति निकट से देखने का अवसर मिला। उन्होंने रोग की गम्भीरता, शारीरिक कष्ट व पीड़ा तथा महर्षि दयानन्द को उन सबको धैर्य के साथ सहन करते हुए देखा। शरीर की अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में व मृत्यु तक महर्षि दयानन्द ने जिस धैर्य का परिचय दिया तथा मृत्यु के समय व उससे पूर्व के उनके कार्य कलापों से वह अत्यधिक प्रभावित हुए। इससे उनके हृदय से ईश्वर की सत्ता के प्रति सन्देह के सभी भाव पूर्णतया समाप्त हो गये और वह ईश्वर, वेद और दयानन्द के एक नये स्वरूप वाले शिष्य बन गये। उसके बाद उनके जीवन का एक–एक क्षण महर्षि दयानन्द के मिशन की प्राणप्रण से सेवा में व्यतीत हुआ। लोगों में संस्कृत की अष्टाध्यायी शिक्षा पद्धति का तो वह प्रचार व शिक्षण करते ही थे, महर्षि दयानन्द की स्मृति में बनाये जाने वाले स्मारक, दयानन्द स्कूल व कालेज, के लिए उन्होंने स्वयं को सर्वात्मा समर्पित कर दिया। देश भर का दौरा किया। उपदेशों से आर्यजनता को प्रेरित व प्रभावित किया। लोगों ने अपनी सम्पत्तियां व प्रभूत धन उन्हें दिया। सृष्टि के इतिहास में देश में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए लोगों से धन संग्रह कर डीएवी कालेज की स्थापना का यह आन्दोलन अभूतपूर्व आन्दोलन है जिसका बाद में अनेक महापुरुषों व संस्थाओं ने अनुसरण किया। इस आन्दोलन के प्रभाव से डी.ए.वी. स्कूल वा कालेज की स्थापना हुई जिसने देश में शिक्षा के प्रचार व प्रसार सहित देश में जन जागरण व उन्नति में अपनी विशेष भूमिका निभाई है। अत्यधिक कार्य करने व आवश्यकतानुसार विश्राम न करने आदि अनेक कारणों से आपको क्षय रोग हो गया था जिसका परिणाम 19 मार्च, सन् 1890 को 25 वर्ष, 10 माह 24 दिन की आयु में मृत्यु के रूप में सामने आया। पण्डित जी मृत्यु से किंचित भी विचलित नहीं हुए और अपने गुरु ऋषि दयानन्द की भांति धैर्य से ईश्वर के नाम ओ३म् का जप करते हुए अपने प्राण त्याग दिये।

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी अनेक अवसरों पर आर्यसमाज में उपदेश भी करते थे। जनता में आपके उपदेशों को पसन्द किया जाता था। वह युग ऐसा था कि भाषणों की रिकार्डिंग सम्भव नहीं थी। भाषण को लिखा जा सकता था परन्तु यह दुर्भाग्य ही कहेंगे कि किसी आर्यसमाज व व्यक्ति ने इस दिशा में प्रयास नहीं किया। आज हम उनके उन उपदेशों से पूर्णतया वंचित हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि पण्डित गुरुदत्त जी ने अंग्रेजी भाषा में उपयोगी एवं महत्वपूर्ण साहित्य लिखा है जो सद्यः हमें प्राप्त है। इससे उनकी प्रतिभा का पता चलता है। पं. गुरुदत्त जी के जीवन चरितों में लाला जीवन दास, लाला लाजपतराय, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी सहित डा. रामप्रकाश द्वारा लिखा गया जीवन चरित प्रसिद्ध है। आर्यकवि वीरेन्द्र राजपूत ने **'तारा टूटा'** नाम से उनके जीवन व व्यक्तित्व को काव्य में प्रस्तुत कर प्रशंसनीय कार्य किया है। उनके समस्त पुस्तकों व उपलब्ध लेखों का संग्रह गुरुदत्त लेखावली के नाम से अंग्रेजी व हिन्दी अनुवाद सहित उपलब्ध है। इनके अब तक अनेक संस्करण छप चुके हैं। पं. गुरुदत्त जी के कुछ प्रमुख ग्रन्थ वैदिक संज्ञा विज्ञान, ईष–मुण्डक व माण्डूक्य उपनिषदों की व्याख्या, इण्डियन विजडम, जीवात्मा की अस्तित्व के प्रमाण आदि हैं। वैदिक संज्ञा विज्ञान को आक्सफोर्ड में पाठ्य क्रम में प्रस्तावित किया गया था। हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास यह सभी ग्रन्थ उपलब्ध हैं और हमने इन्हें पढ़ा भी है।

किसी भी महापुरुष पर एक लेख में उनके जीवन व कार्यों को समग्रतः प्रस्तुत किया जाना सम्भव नहीं होता। इसके लिए तो उनके समस्त साहित्य का अध्ययन करना ही उपयुक्त होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी का जीवन बहुआयामी जीवन है जो मनुष्य को शून्य से सफलता के शिखर पर ले जाता है। इनके जीवन व कार्यों का अध्ययन कर हम अपने जीवन की दशा व दिशा निर्धारित करने में सहायता ले सकते हैं। ईश्वर व वेद की शिक्षाओं सहित ऋषि दयानन्द, समस्त आर्य महापुरुषों व पं. गुरुदत्त जी के जीवन के अनुसार जीवन व्यतीत करना ही उनके प्रति श्रद्धांजलि व जीवन के लिए लाभकारी हो सकता है। पाठक पण्डित गुरुदत्त जी पर उपलब्ध सभी ग्रन्थों को पढ़े, ऐसा करना उनके लिए कल्याणकारी व यश प्रदान करने वाला होने के साथ आत्म सन्तोष व शान्ति प्राप्त करने में सहायक होगा।

आर्यों के प्रेरणा स्तम्भ - शुद्धि सेना के अवैतनिक सिपाही- श्री दुलीचन्द जी, जैलदार

समग्र क्रान्ति के सूत्रधार आर्यसमाज के आन्दोलन ने समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को अपनी तरफ आकृष्ट किया है। श्री दुलीचन्द जी, जैलदार, भी उन लाखों व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने अपना जीवन आर्यसमाज के आन्दोलन को भेंट कर दिया था। उनका जन्म सन् 1889 ई. में ग्राम सुनपेड़ तहसील बल्लभगढ, हरियाणा में हुआ। पिता जी का नाम ठाकुर देवीराम था। उनकी माता गाँव–महेपा जिला बुलन्दशहर, उत्तरप्रदेश की थीं।

युवावस्था में आर्यसमाज के समाज सुधार कार्यक्रमों से आकृष्ट होकर वे निष्ठावान आर्य बने। उनका विवाह गाँव–रौनाजा, जिला बुलन्दशहर (उ.प्र.) की भगवानी देवी से हुआ। दो पुत्र हुए–राजपाल सिंह व सत्यपाल सिंह। गाँव में प्रति वर्ष आर्यसमाज के तीन–चार प्रचार कार्यक्रम करवाते थे। जैलदार जी ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गौरक्षा आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया था। अपने छोटे बेटे सत्यपाल सिंह को आन्दोलनों में जेल भेजा जिसके कारण सब लोग उन्हें महाशय सत्यपाल कहने लगे थे। पलवल के निकट गुरुकुल गदपुरी की स्थापना में उनका विशेष योगदान रहा है। वे हर वर्ष गुरुकुल के लिए अन्न संग्रह करके भिजवाते थे। यह परम्परा उनके परिवार में आज तक बनी हुई है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में : – जैलदार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में शुद्धि आन्दोल में सक्रिय भाग लिया। बल्लभगढ़, पलवल, मेवाड़ व आगरा में लाखों राजपूत, जाट, मेव आदि की शुद्धि में बढ़–चढ़कर भाग लिया। उनके बड़े सुपुत्र राजपाल सिंह जी ने 7 फरवरी 2006 को 'आर्यसमाज के भीष्म पितापह' श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी को यह जानकारी दी थी। उन्हीं के शब्दों में –

"मेरे पिता श्री दुलीचन्द, जैलदार जी ने ही इलाके में आर्य समाज का बीज बोया था। मेरा जन्म सन् 1923 में हुआ था। मेरा नामकरण संस्कार पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही करवाया था। मेरी जीभ पर सोने की अंगूठी से "ओ३म्' लिखवाया था। उस समय हमारी हवेली में आंगन के बीच में पत्थर का हवनकुण्ड स्थापित किया गया था, जो आज तक मौजूद है।

पिता जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ शुद्धि का बहुत काम किया था। जल्हाका, बुडैना, हरसोला तथा जाटों के अनेक गाँवों की शुद्धि करवाई थी।"

स्वामी स्वतंत्रतानन्द पुस्तकालय, हीरा मार्केट, गुरु बाजार अमृतसर : – जुलाई 2010 ई. में पदोन्नति के कारण मेरी पोस्टिंग अमृतसर में हुई। वहाँ मैं दिसम्बर 2012 तक रहा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पुस्तकालय में पुरानी पुस्तकों व समाचार–पत्रों की फाइल उलटते–पुलटते मुझे जैलदार जी के बारे में दो समाचार मिले, जो इस प्रकार हैं:–

1. शुद्धि समाचार का सभा–विवरणांक–15 मई सन् 1930 ई., वर्ष 6 संख्या 5, पृष्ठ 217

अवैतनिक प्रचारक

वैतनिक प्रचारकों के अतिरिक्त बहुत से उपदेशक महानुभावों तथा सहायकों ने इस वर्ष सभा के प्रचार कार्य में समय–समय पर अच्छी सहायता ही है और उन्होंने सभा से किसी प्रकार का भी खर्चा यहाँ तक कि मार्ग व्यय भी प्राप्त नहीं किया।

जैलदार :– पंजाब राज्य जिलावार गजेटियर वॉल्यूम 2ए के पृष्ठ 208–08 के अनुसार:– "प्रत्येक तहसील अनेक सर्कल या जैलों में विभाजित होती है, जिनका प्रभारी जैलदार होता है। जैलदार कोई सरकारी अधिकारी नहीं होता, बल्कि वह प्रायः किसी जैल में सम्मिलित किसी गांव का मुखिया या लम्बरदार होता है। उसकी नियुक्ति लम्बरदारों के समूह में से चयन द्वारा होती है। चयन इन आधारों पर किया जाता है":–

1. जैल में उस व्यक्ति का प्रभाव/रुतबा
2. उसका चरित्र
3. उसके स्वामित्व वाली जायदाद/जमीन का रकबा/ क्षेत्र
4. राज्य/सरकार के प्रति उसके द्वारा की गई सेवायें।

एक जैल में कई गाँव भी सम्मिलित हो सकते हैं । पारितोषिक/प्रतिफल के तौर पर जैलदार को किसी गाँव के राजस्व का एक निश्चित अंश दिया जाता है।

ठाकुर श्री दुलीचन्द की सामाजिक सक्रियता के कारण ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें 1932 ई. में जैलदार नियुक्त किया। सरकार उन्हें आर्यसमाज के कार्यों से उदासीन करना चाहती थी, परन्तु व सन् 1964 ई. तक अत्यन्त उत्साहपूर्वक आर्यसमाज का काम करते रहे। उन्होंने अपनी सन्तान को भूत–प्रेत से न डरने, मूर्तिपूजा न करने आदि के संस्कार दिए। गाँव में शाहपुर मोड़ पर आर्यसमाज का मन्दिर बनवाया।

वानप्रस्थ व संन्यास

जैलदार जी ने गुरुकुल गदपुरी में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। पहले दाढ़ी रखते थे, वानप्रस्थी बनने पर दाढ़ी कटवा दी। फिर सन् 1962 ई. में संन्यास ले लिया तथा गुरुकुल गदपुरी में ही रहने लगे। संन्यास आश्रम में प्रवेश करते समय उनका नाम 'सत्यानन्द सरस्वती' रखा गया था।

मृत्यु का पूर्वाभास

उन्हें मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। अपने पौत्र नरजीत से उनका विशेष स्नेह था। समाज के संस्कार उसे घुट्टी में पिलाए थे। सन् 1939 ई. में मृत्यु से एक सप्ताह पहले गुरुकुल गदपुरी से गाँव आ गए थे। उन्होंने अपने पौत्र नरजीत को बता दिया था कि 7 मार्च को सांयकाल मैं शरीर त्यागूंगा। उन्होंने बाजार से 12 किलो हवन सामग्री, 11 किलो देशी घी, 1 किलो चन्दन लकड़ी मंगवाई। रु. 2100/– गुरुकुल को दान भिजवाया। 6 मार्च को शाम को अपने पौत्र नरजीत को गुरुकुल गदपुरी भेजकर वहाँ से शास्त्री जी को बुलवाया। 7 मार्च सन् 1969 ई. को सांयकाल में वे चल बसे।

सन् 1980 के दशक में आर्यवीर दल की शाखाओं के माध्यम से श्री होतीलाल आर्य व हरवीर आर्य जी ने आर्य समाज में फिर से जीवन फूँका । 1999 ई. में मैंने गाँव में आर्यवीर महासम्मेलन कराया जिसमें जैलदार जी के परिवार ने भरपूर सहयोग दिया। अक्तूबर 2002 ई. में गाँव में आर्य समाज की स्थापना कराई। श्री राजपाल जी ने स्टेट पर आकर मेरी पीठ थपथपाई तथा बोले आज तुमने गाँव का नाम फिर से रोशन कर दिया।

आर्य वीर दल व आर्य समाज के विभिन्न सम्मेलनों, वार्षिकोत्सवों में लगातार गाँव के युवक–युवतियाँ बढ़ चढ़कर भाग ले रहे है।

–धर्मेन्द्र जिज्ञासु, मन्त्री आर्य वीर दल
फरीदाबाद, मो. 8376070712

आर्य महिला आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर का सामवेदीय पारायण महायज्ञ व वार्षिकोत्सव दिनांक 17 से 19 2017 को सोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ, यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी तथा डॉ. देवेश प्रकाश ने सामवेदीय मंत्रों के रहस्यों को समझाया।

श्री अंकित शास्त्री के सुमधुर भजन तथा डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी और श्री श्यामदेव जी के प्रवचन का आनन्द उठाया। दिनांक 19 को समापन समारोह पर मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी, श्री विनय आर्य जी तथा टंकारा ट्रष्ट के प्रधान श्री रामनाथ सहगल जी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी तथा मधुर भजन श्रीमती प्रतिभा देवी जी के मधुर कण्ठ से श्रवण किए मुख्य वक्ता श्रीमती रचना विमल दुबे जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ इस पवित्र उत्सव में आर्य प्रान्तीय महिला सभा की अध्यक्ष श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी, श्रीमती शशिप्रभा आर्या जी, श्रीमती रचना आहूजा जी आदि प्रवुद्ध मातृशिक्त उपस्थित रहीं। इस अवसर पर गणमान्य लोगों में आर्य समाज के सभी अधिकारी श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, श्री सतीश कुमार जी, सावित्री शर्मा जी, ललिता कुमार जी, वेद मदान जी, उमा बजाज जी, अमृता आर्या जी, श्री सतनाम अरोड़ा जी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में समस्त अतिथि महानुभावों का धन्यवाद व आभार आर्य समाज के प्रधान श्रीमान अशोक सहगल जी ने किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन आश्रम की प्रधाना श्रीमती आदर्श सहगल जी द्वारा किया गया।

– श्रीमती जगदीश वधवा, मंत्राणी–आर्य महिला आश्रम

समाज सुधार आन्दोलन है आर्य समाज–महाशय धर्मपाल

आर्यसमाज एक प्रवाहमान आंदोलन है, जो सामाजिक कुरीतियों व अंधविश्वासों के दूर करने के लिए समर्पित (संस्था) है। आज पूरे विश्व में वैदिक विद्या प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। उक्त उद्गार/समाज सेवी महाशय धर्मपाल ने 143 वें आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह एवं भारतीय नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2074 के शुभागमन पर कहे। कमानी आडिटोरियम, मण्डी हाऊस में आयोजित भव्य समारोह में महाशय जी व एमे टी. विश्वविद्यालय के डॉ. आनन्द चौहान ने प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत भी किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा – सृष्टिकाल से हमारी आदर्श परम्पराएं रहीं पर महाभारत युद्ध की परस्पर फूट, अविद्या अंधकार से हमारा समाज दिग्भ्रमित हो गया। समाज सुधारक महर्षि दयानन्द ने नव चेतना उत्पन्नकर आर्यसमाज आन्दोलन का अभियान चलाया।

योगशिक्षित आर्य लेखक की आवश्यकता

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक छात्रों को योगासन प्रशिक्षण हेतु एवं वैदिक सिद्धान्तों पर लेख तथा ट्रेक्ट लिखने में रुचि रखने वाले अविवाहित युवा स्नातक की आवश्यकता है। दोनों विद्याओं में पारंगत अथवा इच्छुक युवा को समृद्ध ग्रंथालय, निवास तथा उचित वेतन की व्यवस्था की जायेगी। गुरुकुलीय स्नातक, ब्रह्मचारी को प्राधान्य। अभ्यर्थी निम्न पते पर परिचय युक्त आवेदन पत्र भेजे। **डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे,**

सीताराम नगर, लातूर, जिला लातूर पिन–813531 (महाराष्ट्र) मो. 9922255596

– शेष पृष्ठ 1 का

विद्वानों का सत्कार, प्राणियों पर दया व करूणा, अंहिसा का प्रचार, योग व यज्ञ का प्रचार, अन्धविश्वासों, पाखण्डों व कुरीतियों का उन्मूलन आदि का कार्य कर, हिन्दू जिसका उज्ज्वल व पूर्व ऐतिहासिक नाम "आर्य" है, उसे ऐसा सशक्त व बलशाली बना दिया कि आज यह जाति सारे संसार में आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे अधिक बलशाली बनकर खड़ी है। नित्य प्रति इसके निर्धन, भूखे व बेबस लोगों का शोषण, अन्याय व धर्मान्तरण किया जाता था, वह नियन्त्रित हुआ तथा आगे के लिए इसका उत्कर्ष का मार्ग निश्चित हुआ। यह महर्षि दयानन्द भगवान राम व भगवान कृष्ण की परम्परा में हुए और इन्होंने वही कार्य किये जो कि किसी वेद के अनुयायी व वेदभक्त से अपेक्षित था। हमें तो लगता है कि ईश्वर स्वयं यह कार्य करवाना चाहते थे तभी उन्होंने महर्षि दयानन्द को इसका पात्र बनाया। भगवान राम, भगवान कृष्ण व भगवान दयानन्द ने अपने जीवन में जो-जो कार्य किये वह समस्त मानव जाति व प्राणि मात्र के हित के कार्य थे। आज यदि भगवान राम व भगवान कृष्ण सशरीर होते, तो स्वामी दयानन्द का समर्थन कर कहते कि हे आर्य सन्तानों, तुम महर्षि दयानन्द को वही सम्मान, सत्कार व पूजा प्रदान करो जो तुम हमें करते हो, क्योंकि हम अलग-अलग भले ही दिखाई दें परन्तु हम भावनात्मक, धर्म-मत-संस्कृति व विचारधारा से एक हैं।

भगवान राम की रामनवमी मनाते हुए हम एक और महत्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं और वह यह है कि भगवान राम अपने नित्यकर्मो में पंच-महायज्ञों का अनुष्ठान पूरी निष्ठा से करते थे। पंच-महायज्ञों में प्रथम है ईश्वरोपासना जिसे सन्ध्या भी कहा जाता है। वेदों में सन्ध्या करने का प्रातः व सायं का विधान है। ईश्वर का चिन्तन व सन्ध्या करने से जीवात्मा व आत्मा को, बल, ज्ञान, शुभ कार्यों को करने की प्रेरणायें मिलने के साथ सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है और उसका यश व कीर्ति बढ़ती है। इसके साथ भगवान राम अपने जीवन में नित्य-प्रति अग्निहोत्र-देव यज्ञ भी करते थे। वह केवल स्वयं ही यज्ञ ही करते थे अपितु यज्ञों में तन-मन व धन से सहायता भी करते थे। इतना ही नहीं यदि कोई कहीं यज्ञ में विघ्न डालता था तो उसका पराभव या दण्डित करते थे। यज्ञों में विघ्न डालने वाला यदि कोई राजा हो और समझाने से भी वह समझता नहीं था तो उसका विनाश व दण्ड देकर यज्ञ की रक्षा करते थे। श्री रामचन्द्रजी के जीवन में यज्ञ की रक्षा के जो उदाहरण मिलते हैं, ऐसे उदाहरण वैदिक ऐतिहासिक साहित्य में अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होते। इसी प्रकार से वह माता-पिता व आचार्यों के एक आदर्श आज्ञा पालक व सेवक थे। उनके माता-पिता व आचार्यों को उनके कार्य व व्यवहार से किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं थी। इस प्रकार से पितृयज्ञ को करने के साथ वह अतिथि यज्ञ व प्राणि यज्ञ भी करते थे। अतिथि सदैव उनसे सन्तुष्ट रहते थे तथा किसी प्राणी को उन्होंने निष्कारण दुःख कभी नहीं दिया। इसप्रकार से भगवान राम पंचमहायज्ञ के नित्य प्रति अनुष्ठानकर्ता थे। इसी का प्रवर्तन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आधुनिक काल में किया है।

हमने उपर्युक्त पंक्तियों में देखा कि भगवान राम, भगवान कृष्ण व भगवान दयानन्द वैदिक धर्म के पोषक, रक्षक, सेवक, परिष्कर्ता, संशोधक, प्रशंसक, यशस्वी, व कीर्तिमान युगपुरूष थे। वैदिक धर्म क्या है? यह ईश्वर से उत्पन्न मानव-मात्र व प्राणी-मात्र को सुखी बनाने का ऐसा जीवन-विधान है जिससे सारे विश्व में सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है। सारे संसार में दुःख का प्रमुख कारण मत-मतान्तर व अज्ञान व स्वार्थ पर आधारित इसी प्रकार की संस्थायें आदि है। भगवान राम वैदिक धर्मी थे। वेदों के प्रति उनमें अगाध श्रद्धा थी। वह वैदिक मर्यादाओं के पालक थे। जब हम कहते हैं कि वह मर्यादा पुरूषोत्तम थे तो इसका अर्थ यही होता है कि वह वैदिक मर्यादाओं के रक्षक, पोषक व पालक थे। वैदिक मर्यादाओं को उन्होंने अपने जीवन में साक्षात् किया था। ऐसे वेदों के निष्ठावान युग पुरुष भगवान राम के जन्म दिवस रामनवमी पर हमें उनके गुणों को जानकर उन्हें अपने जीवन में धारण करना है और इसके साथ वेदों को जानकर, उनका अध्ययन कर उनके आदर्शों के अनुरूप अपने जीवन का निर्माण करना है। इस कार्य में महर्षि दयानन्द व उनका साहित्य सहायता कर सकता है। आइये जीवन में वेदों के स्वाध्याय, वैदिक शिक्षाओं का पालन करने का व्रत लेकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की जयन्ती मनायें एवं अपने जीवन को सफल बनायें।

–मनमोहन कुमार

मार्च –2017 के आर्थिक सहयोगी

श्री सुभाष चन्द्र चांदना जी, ट्रस्टी मालवीय नगर, नई दिल्ली		11000/-
अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली छः माह		7200/-
आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली	छः माह की सहायता	3000/-
श्रीमती सुदर्शन लता चौधरी जी, विकास पुरी, नई दिल्ली		2100/-
श्री नाहर सिंह जी, अम्बेडकर कालोनी, विजवासन, नई दिल्ली		1100/-
श्री के. एल. कम्सोज जी, द्वारका, नई दिल्ली		1000/-
श्री शिव कुमार मदान जी, जनकपुरी, नई दिल्ली	पांच माह के लिए	1000/-
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.15 ऐ, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/-
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक	750/-
श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	500/-
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्रीमती उमा बजाज जी, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	मासिक	500/-
श्रीमती गीता झा जी, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली		250/-
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/-
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली		100/-

श्रीमती संतोष वधवा जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती वन्दना ढींगरा जी, यू.एन. मेहता शाही बाग, अहमदाबाद गुजरात आजीवन	500/-
श्रीमती संतोष वधवा जी, ई-ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती स्वराज थापर जी, ई-ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-
श्रीमती राकेश मल्होत्रा जी, ई-ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-
श्रीमती परमजीत कौर जी, ई-ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	500/-
श्रीमती कमला डाबर जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	200/-
श्री सिद्धार्थ कालरा जी, मुरादाबाद	100/-
श्रीमती नीलम खुराना जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती संतोष बहल जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
सुश्री मोना जी, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
आयुष्मती स्वस्ति आर्या, महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
पं. रुकमपाल शास्त्री जी गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली	100/-

वैदिक विद्वान एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को स्वामी प्रज्ञानन्द प्रज्ञा भूषण सम्मान

संस्कारधानी जबलपुर (म्र.प्र.) की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'कादम्बरी' ने 2016 के साहित्यकार/पत्रकार सम्मान समारोह के अवसर पर मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को अपने सर्वोच्च सम्मान 'स्वामी प्रज्ञानन्द प्रज्ञा भूषण सम्मान' से सम्मानित किया। सम्मान रूप में उन्हें मोतियों की माला, प्रशस्ति पत्र एवं 21 हजार रूपर की मानराशि प्रदान की गई। उन्हें यह सम्मान रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र एवं प्रख्यात समालोचक आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी ने प्रदान किया।

परस्पर प्रेम, सौहार्द व खुशहाली का सन्देश फैलायें-महाशय धर्मपाल

होली का पावन पर्व यह संदेश लाता है कि मनुष्य अपनी ईर्ष्या द्वेष तथा परस्पर वैमनस्य को भुलाकर समानता और प्रेम का दृष्टिकोण अपनाए, मौज मस्ती और मनोरंजन के इस पर्व में हंसी-खुशी सम्मिलित हो। यह सद्विचार प्रसिद्ध उद्योगपति वरिष्ठ समाज सेवी और आर्य शिरोमणि महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल राजा बाजार कनॉट प्लेस दिल्ली में आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में कहे। उन्होंने हजारों आर्य जनों को होली पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि होली हमारा प्रमुख त्यौहार है जिसे मनाने के लिए हमें आपसी भेदभाव भुलाकर सभी में भाईचारे को बढ़ाने वाला संदेश दिया।

– विनय आर्य, महामंत्री

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रचारकों की कार्यशाला 18 मार्च 2017 को आर्य समाज बिरला लाइन्स में सम्पन्न

सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके यजमान श्री सुभाष चन्द्र चांदना जी और यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य कुवँरपाल शास्त्री जी थे पहले सत्र में सभी प्रचारको का परिचय एवं कार्य रिर्पोट लिया गया।

दूसरा सत्र –

श्री हरबंस लाल जी कोहली सरंक्षक का उद्बोधन – भारत के इतिहास के बारे में बताया, आज देश में फैली वर्ण व्यवस्था को समाप्त करने की आवश्यता हैं, छुआछूत समाप्त हो चुकी है। दलित शब्द समाप्त होना चाहिये। शुद्धि सभा के प्रचारक कम से कम देश में एक लाख होने चाहिये। गौ हत्या पूरे भारत में बन्द होनी चाहिये। शराब का प्रचलन बहुत ज्यादा बढ़ा है। इसको कैसे रोका जाये?

आचार्य प्रेमपाल जी शास्त्री – हमारे प्रचारक शुद्धि कराते है लेकिन बाद में शुद्धि कराये परिवार के सामने रोटी, बेटी की समस्या आती है उनके बेटे एवं बेटी के रिश्तों की समस्या आती है। मेरा सुझाव है शुद्धि प्रचारकों को उचित मान देय बढ़ाया जाये एवं अन्य सुविधा भी दी जाये। संघ भी शुद्धि में काफी योगदान कर रहा है।

श्री धर्मपाल आर्य जी (प्रधान) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – सीमित साधन होने के बावजूद भी आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं आप धन्यवाद के पात्र है। हम आपके हमेशा ऋणी रहेगें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने सीमित साधन होने के बावजूद भी प्रचारकों को पूरा सहयोग करेगी।

श्री विनय आर्य जी (महामंत्री) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – हम सब अपने शुद्धि के इतिहास को जानें कम से कम 30 प्रचारक बनाने है। भविष्य में तीन दिन की कार्यशाला होनी चाहिये। इसका खर्चा दिल्ली सभा एवं शुद्धि सभा मिलकर करेगी।

श्री विजय गुप्त जी आशु कवि – सनातन धर्म के जो मठाधीश है उनकी शुद्धि करनी है। हिन्दु समाज की शुद्धि करानी है। अपने परिवार की शुद्धि करनी है।

श्री गवेन्द्र जी शास्त्री का उद्बोधन – 1. कोई विधर्मी बनता है तो उसका विरोध काफी तेजी से किया जाये। 2. वैदिक साहित्य अधिक से अधिक बाटाँ जाये। 3. जो विधर्मी से हिन्दु बने हो उनकी सी.डी. बना कर लोगो को सुनाया जाये। 4. शुद्धि समाचार में अच्छे लेख दें तथा उसका प्रचार करें । 5. प्रान्तीय स्तर राष्ट्रीय स्तर जिले स्तर पर कार्य किया।

डॉ. देवेश प्रकाश जी का उद्बोधन – हम अच्छे विचार लोगों को दे। विचार से लोगो को बदला जा सकता है। शिक्षा पर विशेष बल दिया जाये।

श्री प्रणव मिश्र जी (बरेली शाहजहापुर) – ईसाई मशीनरी के विरुद्ध हमने वैदिक सस्था चलायी है इनकी ब्रांच कई गाँवों में चला रहे है। इसमें काफी बच्चों को वैदिक संस्कार कराये जाते है। संस्कार शालायें अधिक से अधिक खोली जायें।

चौ. नाहर सिंह – 940 लोगों को मैंने उनका रहने की व भोजन की व्यवस्था की जो कि पाकिस्तान से दुःखी होकर आये थे। अब उनकी सारी व्यवस्था भारत सरकार ने कर दी है।

श्री प. नवीन चन्द्र शास्त्री जी मेंनपुरी उत्तर प्रदेश – शुद्धि का कार्य गुप्त रूप से किया जाये। समाचारों पत्रों में इसका विवरण आने पर परेशानी आ सकती है तथा जान का खतरा बना रहता है।

इन्द्र मणि जी उड़ीसा – ईसाई मिशनरी खाली जगह पर जो कि सरकारी है उस पर कब्जा करके गिरजाघर बनाते है। हर जिले में एक एक प्रचारक अत्यन्त आवश्यक है ।

आचार्य शैल कुमार जी, छत्तीसगढ़ – योग और यज्ञ के माध्यम से प्रचार शुद्धि का हो सकता है अधिकारी वर्ग इन क्षेत्रों में जाकर भी देखे।

श्री के. एम. राजन (केरल) – संस्कृत भाषा की कक्षा चलाते है उसमें मुसलमान भी आते हैं शुद्धि सभा के अधिकारी केरल में आये तथा देखें कि हम किस तरह यह कार्य कर रहे हैं।

श्री सन्तोष कुमार राउत (आकोला, महाराष्ट्र) – शुद्धि सभा से 2011 में जुड़ा हूँ। आर्य समाज, बजरग दल, आर.एस.एस. एवं वहाँ के सांसद विधायक भी हमारी मदद करते हैं तथा स्कूल भी चलाया है उसमें मुसलमान बच्चे भी है। उन्हें हम संस्कार देते है।

श्री हीरालाल आर्य जी (पाली, राजस्थान) – हरिजन बस्ती से जुड़ा हुआ हूँ स्कूल में योग की कक्षा यज्ञ आदि कराते हैं आर्य समाज का मन्त्री हूँ । आर.एस.एस. से भी जुड़ा हूँ धर्मान्तरण की समस्या नहीं है।

श्री ज्ञानेन्द्र शास्त्री (समस्तीपुर बिहार) – में लोगों को जोड़ता हूँ जिससे शुद्धि कार्य में गति आये दो लड़कों को यहाँ लाये है यह इस कार्य को आगे बढ़ायेगे।

श्री आसाराम जी, (एटा) – 2001 में मेरी शुद्धि हुई थी, अनेक परिवार शुद्ध किये और भी परिवार शुद्ध करने की तैयारी है।

डा. बिजेन्द्र पाल सिंह (खुर्जा) – 32 परिवार शुद्ध किये। शुद्ध करने के बाद उन्हे रोकना मुश्किल है। जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती उन्हें परेशानी होती है। उनकी परेशानी को दूर करने के उपाय किये जाऐ।

श्री मटरुलाल जी (बदायूं) – 1984 से शुद्धि कार्य कर रहा हूँ आगे भी करता रहूंगा। हमेशा सभा का सहयोग करता हूँ।

श्री रौनक कुमार शास्त्री (गुजरात)– 25 ग्राम आदिवासीयों के यहां हमने कपड़े, अनाज एवं अन्य सहायता दी इन आदिवासी ग्राम में एक भी ईसाई एवं मुसलमान नहीं है।

श्री सुन्दर मुनि जी (मेवात) – मेवात में गऊ हत्या, लव जिहाद बहुत जोरों पर है, पुलिस पैसों के लिये उनका साथ देती है। वकील डर के मारे हिन्दुओं का केस नहीं लडता। हिन्दुओं का अपमान एवं धर्मातंरण निरंतर जारी है।

श्री शिवराज सिंह आर्य (खुर्जा) – मैं शुद्धि का कार्य, शुद्धि प्रचारकों के साथ मिल कर कर रहा हूँ।

श्री स्वदेश पाल जी गुप्ता, धर्म जागरण मंच के **प्रमुख** – 2001 में आर्य समाज से मिलकर धर्म जागरण मंच ने आर्य समाज करोल बाग में मूले जाटों की शुद्धि का कार्य आरम्भ किया था। मूले जाट का दूसरा शुद्धि का कार्य बहादुर गढ़ में किया। जब हम शुद्धि करा कर विवाह कराने के लिये आर्य समाज में जाते है तो अधिकांश आर्य समाज राशि की मांग करते हैं धर्म कार्य में यह नहीं होना चाहिये।

श्री कीर्ति शर्मा जी प्रधान आर्य समाज करोल बाग– प्रचारकों की कार्यशाला होती रहनी चाहिये। श्री रज्जु भैया हमारे घर में भोजन पर आये थे उन्होंने कहा हमारे लिये शुद्धि का प्रेरणाश्रोत आर्य समाज है सब संस्थाओं से जो कि शुद्धि का कार्य कर रहे है सर्म्पक किया जाये।

श्री विद्या चरण जी – शुद्धि के कार्य में सबसे ज्यादा बाधक है जाति प्रथा। रोटी बेटी की समस्या। समाज में वर्ण व्यवस्था जन्म से न होकर कम से होनी चाहिये।

श्री बलेश्वर जी मुनि (अजमेर) – केरल में गुरुकुल के लिये एक एकड जमीन ली है। इसकी कीमत 15 लाख रुपये है। इसमें शुद्धि सभा अपना एक कमरा बना ले तथा शुद्धि का प्रचार हो सकता है।

निम्नलिखित प्रचारको को वस्त्र और साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

1. श्री शेखर आर्य जी
2. श्री मटरु लाल जी
3. श्री आशा राम जी
4. श्री विजेन्द्र पाल जी
5. श्री प्रणव मिश्र जी
6. श्री सन्तोष कुमार जी
7. श्री नवीन चन्द शास्त्री जी
8. श्री इन्द्र मणि शास्त्री जी
9. आचार्य श्री शैल कुमार जी
10. श्री के. एम. राजन जी
11. श्री रौनक कुमार शास्त्री जी
12. श्री ज्ञानेन्द्र शास्त्री जी
13. श्री हीरा लाल आर्य
14. श्री सुन्दर मुनि जी

प्रचारकों को सम्मानित किया गया एक उपहार एवं मानदेय दिया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन शुद्धि सभा के महामंत्री श्री चतर सिंह नागर जी द्वारा किया गया तथा सभा समाप्ति पर सभी प्रचारकों व विद्वानों का धन्यवाद व आभार प्रकट शुद्धि सभा के प्रधान श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी ने किया।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-04-2017 (pages 8) Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अप्रैल – 2017

शुद्धि सभा के प्रचारकों की कार्यशाला का सचित्र वर्णन

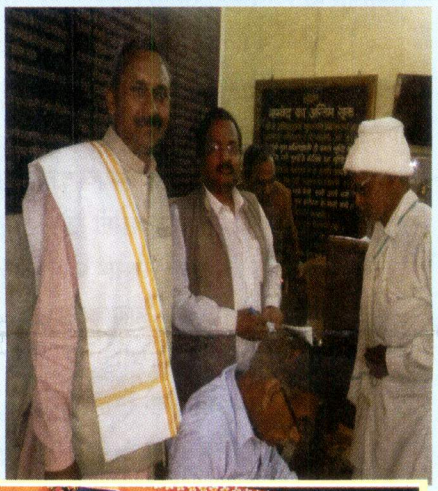

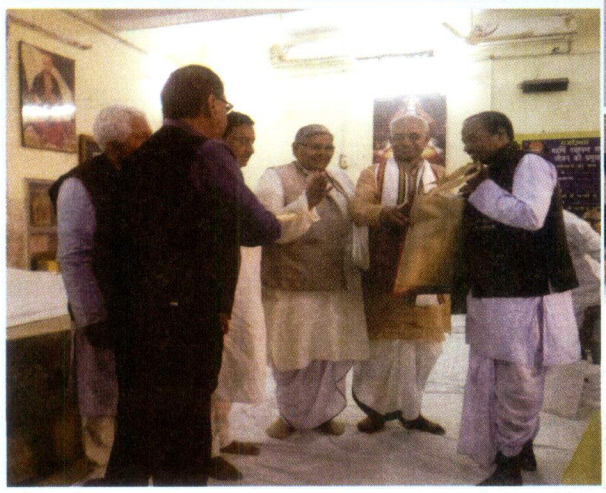

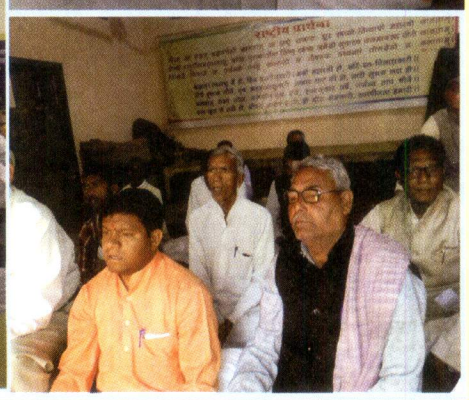

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से आयोजित 143 वें आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश